05524

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2009

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **3x12=36**

(a) जात ले जात, टके सेर जात। एक टका दो, हम अभी अपनी जाति बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाएँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनाएँ। वेद धर्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर।

(b) ऐसा जीवन तो विडम्बना है, जिसके लिए एक-दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दाँत-पर-दाँत रखे मुट्ठियों को बाँधे- लाल आँखों से एक दूसरे को घूरा करें। बसंत से मनोहर प्रभात में, निमृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहा कर लाल कर दिया जाय। नहीं-नहीं, चक्र! मेरी समझ में मानव-जीवन का यही उद्देश्य नहीं है। कोई और भी निगूढ़ रहस्य है चाहे में स्वंय उसे न जान सका हूँ।

(c) मैंने कहा था, यह नाटक भी मेरी तरह अनिश्चित है। उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है। एक विशेष परीवार, उसकी विशेष परिस्थितियाँ। परिवार दूसरा होने से परिस्थितियाँ बदल जाती, मैं वही रहता। इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता। इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री, किसी दूसरी तरह से मुझे झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका ले कर उसे झेलता। नाटक अंत तक फिर भी इतना ही कठिन होता कि इसमें मुख्य भूमिका किसकी थी- मेरी, उस स्त्री की, परिस्थितियों की, या तीनों के बीच से उठते कुछ सवालों की।

(d) मरण–नहीं है ओ व्याध!

मात्र रूपांतरण है वह

सबका दायित्व लिया मैं ने अपने ऊपर

अपना दायित्व सौंप जाता हूँ मैं सबको

अब तक मानव–भविष्य को मैं जिलाता था।

लेकिन इस अंधे युग में मेरा एक अंश

निष्क्रिय रहेगा, आत्मघाती रहेगा

और विगलित रहेगा

संजय युयुत्सु, अश्वत्थामा की भाँति

क्योंकि इनका दायित्व लिया है मैं ने।

(e) रसखान तो किसी की 'लकुटी और कामरिया' पर तीनों पुरों का राजसिंहासन तक त्यागने को तैयार थे पर देशप्रेम की दुहाई देने वालों में से कितने अपने किसी थके माँदे भाई के फटे–पुराने कपड़ो और धूल भरे पैरों पर रीझकर, कम से कम न खीझकर, बिना मन मैला किए कमरे की फर्श भी मैली होने देंगे? मोटे आदमियों तुम जरा–सा दुबले हो जाते– अपने अँदेशे से ही सही– तो न जाने कितनी ठठरियों पर माँस चढ़ जाता।

(f) संसद के गंगा तटवर्ती बंगले को छोड़कर ही निराला जी फिर दारागंज की अपनी पुरानी कोठरी में चले गए, वहीं अवसाद और भक्ति का यह मिश्र स्वर मुखर होता गया। और वहीं गहरे धुंधलके और तीखे प्रकाश के बीच भँवराते हुए निराला उस स्थिति की ओर बढ़ते गए जहाँ एक ओर वह कह सकते थे ''कौन निराला? निराला इज़ डैड!'' और दूसरी ओर दृढ विश्वास पूर्वक 'हिंदी के सुमनों के प्रति' संबोधित हो कर एक आहत किंतु अखंड आत्म-विश्वास के साथ यह भी कह सकते थे, ''मैं ही वसंत का अग्रदूत''।

2. 'अंधेरे नगरी' नाटक अपने समय और समाज का चित्रण किस प्रकार करता है? इसमें निहित तात्कालिक यथार्थ की आज क्या प्रासंगिकता है? विस्तार से स्पष्ट कीजिए। **16**

3. अभिनेयता की दृष्टी से 'स्कंदगुप्त' नाटक की समीक्षा कीजिए। **16**

4. 'आधे-अधूरे' की नाट्य संरचना की विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। **16**

5. 'अंधायुग' की कथावस्तु का आधुनिक संदर्भों में विवेचन कीजिए। **16**

6. भाषा और शैली की दृष्टी से 'धोखा' निबंध की समीक्षा कीजिए। **16**

7. ललित निबंध की दृष्टि से 'कुटज' का विवेचन करते हुए बताइए कि इसके माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? 16

8. 'तीसरे दर्जे का श्रध्देय' किस तरह का निबंध है? इसे केंद्र में रखते हुए हरिशंकर परसाई की निबंध कला पर प्रकाश डालिए। 16

9. रेखाचित्र की विशेषताओं के संदर्भ में 'ठकुरी बाबा' का विश्लेषण और मूल्यांकन कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : **2x8=16**

(a) भुवनेश्वर

(b) 'कलम का सिपाही'

(c) राहुल सांकृत्यायन

(d) रिपोर्ताज़

- o O o -